१. अंबरपंचेक्कचउणव छ पण सुण्ण णवय सत्तो व। अंककमे जोयणया जंबूदीवस्स खेत्तफलं ।।५८।। ७९०५६९४१५० । एक्को कोसो दंडा सहस्समेक्कं हुवेदि पंच सया। तेवण्णाए सहिदा किंक्रू हत्थे ससुण्णाइं ।। ५९ ।। को. १ दंड १५५५३ ।० ।० एक्को होदि विहत्थी सुण्णं पादम्मि अंगुल एक्कं । जव छ तिय जूवा लिक्खाउ तिण्णि णादव्वा ।। ६० ।। १ ।० ।१ ।६ ।३ कम्मक्खोणीए दुवे वालग्गा अवरभोगभूमीए । सत्त हुवंते मज्झिममोगखिदीए वि तिण्णि पुढं ।। ६१।। २ ।७ ।३ सत्त य सण्णासण्णा ओसण्णासण्णया तहा एक्को । परमाणूण अणंताणंता संखा इमा होदि ।। ६२ ।। ७ ।१ । अडतालसहस्साइं पणबण्णुत्तर चउस्सया अंसा। हारो एक्कं लक्खं पंच सहस्साणि चउ सया णवयं ।। ६३ ।। ४८४५५/१०५४०९ ति. प. माणुसलोया। पण्णासमेकदालं णव छप्पणास सुण्ण णव सदरी । साहियकोसं च हवे जंबूदीवस्स सुहुमफलं ।। ३१३।। त्रि. सा.

छ. २५

एदस्स एया सलागा होदि[1]। एदेण पमाणेण लवणसमुद्दे कीरमाणे सो जंबूदीवादो खेत्तगणिदेण चउवीसगुणो होदि । वुत्तं च-

बाहिरसूईवग्गो अब्भंतरसूइवग्गपरिहीणो ।

जंबूदीवपमाणा खंडा ते होंति चउवीसा[1] ।। ४ ।।

एदीए गाहाए सव्वेसिं दीव-समुद्दाणं पुध पुध खेत्तफलसलागाओ आणेदव्वाओ। तत्थ अट्ठण्हं खेत्तफलसलागाओ एदाओ-

१	२४	१४४	६७२	२८८०	११९०४	४८३८४	१९५०७२

लवणसमुद्दखेत्तफलमप्पण्णो पमाणेणं एगं होदि । लवणसमुद्दपमाणेण धादइखंडम्हि कीरमाणे सो छग्गुणो होदि। कालोदयसमुद्दो अट्ठावीसगुणो होदि। पोक्खरदीवो वीसुत्तरसदगुणो होदि। पोक्खरसमुद्दो चदुसदछण्णउदिगुणो होदि ।

इसकी अर्थात् जम्बूद्वीपके उक्त क्षेत्रफलकी एक शलाका (१) होती है। इस प्रमाणसे लवणसमुद्रके क्षेत्रका गणित करनेपर वह जम्बूद्वीपके क्षेत्रफलसे चौबीस गुणा होता है। कहा भी है- लवणसमुद्रकी बाह्यसूचीके वर्गको उसीकी आभ्यन्तर सूचीके वर्गके प्रमाणसे कम करनेपर जम्बूद्वीपके क्षेत्रफलप्रमाण उसके चौबीस खंड होते हैं।।५।।

इस गाथाके अनुसार समस्त द्वीप और समुद्रोंकी पृथक्, पृथक् क्षेत्रफल शलाकाएं ले आना चाहिये। उनमेंसे आठ द्वीप-समुद्रोंकी क्षेत्रफल-शलाकाएं इस प्रकार होती है-

१, २४, १४४, ६७२, २८८०, ११९०४, ४८३८४, १९५०७२.

उदाहरण - (१) लवणसमुद्र-बाह्यसूची ५ लाख, आभ्यन्तरसूची १ लाख योजन ५२-१२ = २५- १=२४.

(२) घातकी खंडद्वीप-बाह्यसूची १३ लाख, आभ्यन्तरसूची ५ लाख योजन १३२-५२ = १६९-२५ =१४४.

(३) कालोदधि बाह्यसूची २९ लाख, आभ्यन्तरसूची १३ लाख योजन.

२९२-१३२ = ८४१-१६९ = ६७२ । इत्यादि ।

लवणसमुद्रका क्षेत्रफल अपने प्रमाणकी अपेक्षा एक होता है। लवणसमुद्रके प्रमाणसे घातकीखंडका प्रमाण करनेपर घातकीखंड छह गुणा होता है। कालोदधिसमुद्र अट्ठाईसगुणा है। पुष्करद्वीप एक सौ वीस गुणा है। पुष्करवरसमुद्र चारसौ छ्यानवे गुणा है। इस प्रकारसे लवणसमुद्रकी जम्बूद्वीपप्रमाणशलाकाओंसे द्वीप और सागरोंसम्बन्धी जम्बूद्वीपप्रमाण शलाकाएं

----

३. बाहिरसूईवग्गो अब्भंरस्सूइवग्गपरिहीणो। लक्खस्स कदिम्मि हिदे इच्छियदीवध्दिखंडपमाणं ।। ति. प. ५, ३६ बाहिरसूईवग्गं अब्भंतरसूइवग्गपरिहीणं । जंबूवासविभत्ते तत्तियमेत्ताणि खंडाणि । त्रि. सा. ३१६.

एवं लवणसमुद्दजंबूदीवसलागाहि दीव-सायरजंबूदीवसलागाओ ओवट्टिय गुणगारा उप्पादेदव्वा। १ ।६ ।२८ ।१२० ।४९६ ।२०१६ ।८१२८। एवं ठविदगुणगारसलागाहि लवणसमुद्दजंबूदीवसलागाओ गुणियं जंबूदीवजोयणपदराणि गुणिदे इच्छिददीवसायराणं खेत्तफलं होदि। संपहि समुद्दाणं चेव खेत्तफलमाणेदुमिच्छामो त्ति अप्पणो इच्छिद-इच्छिदसमुद्दाणं लवणसमुद्दगुणगारसलागाणयणविधाणं वुच्चदे- लवणोदय- समुद्दादो कालोदयसमुद्दो खेत्तफलेण अट्ठावीसगुणो । तम्हि उप्पाइज्जमाणे दो रुवे ठविय पढमस्स वड्ढी णत्थि त्ति एगरुवमवणिय सेसेगरुवं विरलिय सोलस दादूण अण्णोण्णब्भासे कदे सोलस होंति। ते दुगुणिय चत्तारि अवणिदे कालोदयसमुद्दस्स अट्ठावीस गुणगारसलागा उप्पजंति। तेहिं लवणोदयसमुद्दस्स खेत्तफले गुणिदे कालोदयसमुद्दस्स खेत्तफलं होदि। लवणसमुद्दादो पोक्खरसमुद्दो खेत्तगुणिदेण चत्तारिसदछण्णउदिमेत्तगुणो होदि। तम्हि गुणगारे आणिज्जमाणे तिण्णि समुद्दा त्ति

अपवर्तितकर गुणकार उत्पन्न करना चाहिये जो इस प्रकार आते हैं- १, ६, २८, १२०, ४९६, २०१६, ८१७८।

उदाहरण - (१) लवणसमुद्रकी जम्बूद्वीपशलाकाएं २४। ल. स. की. प्रमाण शलाकाएं २४। २४/२४ = १ लवणसमुद्रकी गुणकारशलाका।

(२) घातकीखंडद्वीपकी प्रमाणशलाका १४४ । १४४/२४ = ६ गुणकारशलाकाएं ।

(३) कालोदकसमुद्रकी प्रमाणशलाका ६७२ । ६७२/२४ = २८ गुणकारशलाकाएं । इत्यादि।

इस प्रकार स्थापन की गई गुणकारशलाकाओंसे लवणसमुद्रकी जम्बूद्वीपप्रमाण शलाकाओंको गुणित करनेपर पुन: उसे जम्बूद्वीपके प्रतरात्मक योजनोंसे गुणा करनेपर इच्छित द्वीप और क्षेत्रफल आता है।

उदाहरण- (१) घातकीद्वीप-गुणकारशलाका ६,

६X२४X७९०५६९४१५० घातकी द्वीपका क्षेत्रफल।

(२) कालोदधि-गुणकारशलाका २८,

२८X२४X७९०५६९४१५० कालोदधिका क्षेत्रफल।

(३) पुष्करद्वीप-गुणकारशलाका १२०,

१२०X२४X७९०५६९४१५० पुष्करद्वीपका क्षेत्रफल । इत्यादि।

अब केवल समुद्रोंका ही क्षेत्रफल निकालना चाहते हैं, इसलिए अपने अपने इष्ट समुद्रोंकी लवणसमुद्रप्रमाण गुणकारशलाकाओंके निकालनेका विधान कहते हैं-

लवणोदकसमुद्रसे कालोदकसमुद्र क्षेत्रफलकी अपेक्षा अट्ठाईसे गुणा है। उसे उत्पन्न करनेके लिए दो रुपको स्थापनकर प्रथमसमुद्रकी वृध्दि नहीं है, इसलिए एक रुप कम कर शेष एक रुपको विरलन कर उसके ऊपर सोलह देकर परस्परमें गुणित करनेपर सोलह ही होते हैं।

कट्टु रुवूणं करिय विरलिय रुवं पडि सोलस दादूण अण्णोण्णब्भासे कदे वेसदछप्पण्णा होंति। ते दुगुणिय पुध ट्ठविय पुणो पुव्विल्लविरलणमेव विरलिय रुवं पडि चत्तारि दादूण अण्णोण्णगुणं करिय उप्पण्णरासिं दुगुणरासीदो अवणिदे पोक्खरसमुद्दस्स गुणगारसलागा होंति। तेहि लवणसमुद्दखेत्तफले गुणिदे पोक्खरसमुद्दस्स खेत्तफलं होदि । पुणो चउत्थसमुद्दो लवणसमुद्दं दट्ठूणट्ठावीससदाहिय अट्ठसहस्सगुणो होदि। एदस्स गुणगारस्स उप्पत्ती वुच्चदे- चत्तारि रुवूणे करिय विरलिय रुवं पडि सोलस दादूण अण्णोण्णगुणे कदे छण्णउदिरुवाहियचत्तारिसहस्साणि होंति। ते दुगुणिय पुध ट्ठविय पुव्विल्लविरलणरासिं विरलिय रुवं पडि चत्तारि दादूण अण्णोणगुणे कदे चउसट्ठी उप्पज्जदि। पुणो पुव्विल्लदुगुणिदरासिम्हि एदमवणिदे चउत्थसमुद्दस्स गुणगारसलागा होंति। एदाहि लवणसमुद्दखेत्तफले गुणिदे चउत्थसमुद्दखेत्तफलं होदि। एवमणेण बीजपदेण सव्वसमुद्दाणं खेत्तफलमाणेदव्वं।

उन्हें दूना कर उनमेंसे चार कम कर देने पर कालोदकसमुद्रकी अट्ठाईस गुणकारशलाकाएं उत्पन्न होती हैं।

उदाहरण- कालोदधि लवणसमुद्रसे दूसरा समुद्र है, अत: क्रमशलाका २.

१६

२-१ =१;   १ = १६;   १६ X २ - ४ = २८. कालोदकसमुद्रकी गुणकारशलाका.

कालोदकसमुद्रकी गुणकारशलाकाओं द्वारा लवणसमुद्रके क्षेत्रफलको गुणा करने पर कालोदकसमुद्रका क्षेत्रफल हो जाता है। लवणसमुद्रकी अपेक्षा पुष्करसमुद्र क्षेत्रफलकी अपेक्षा चारसौ छ्यानवे गुणा है। उसका गुणकार निकालनेके लिए पुष्करसमुद्र तीसरा है, इसलिए तीनमेंसे एक कम करके शेष बचे दोका विरलनकर एक एक रुपके प्रति सोलह देकर परस्परमें गुणा करने परदो सौ छप्पन्न होते हैं। उन्हें दुगुणा करके पृथक् स्थापित कर पुन: पहिलेके विरलनको ही विरलित कर प्रत्येक रुपके प्रति चार देकर और परस्परमें गुणा करने पर जो राशि उत्पन्न हो उसे उसीकी दूनी राशिमेंसे घटाने पर पुष्करसमुद्रकी गुणकारशलाकाएं होती हैं।

उदाहरण - पुष्करसमुद्रकी क्रमशलाका ३.

१६X१६

३-१ =२; १ १= २५६; २५६X२ = ५१२.

४ X ४

विरलनराशि २; १ १ = १६; ५१२ - १६ = ४९६ पुष्करसमुद्रकी गुणकारशलाका.

इस गुणकारशलाकाओंसे लवणसमुद्रके क्षेत्रफलको गुणा करनेपर पुष्करसमुद्रका क्षेत्रफल हो जाता है। पुन: चौथा समुद्र लवणसमुद्रको देखते हुए आठ हजार एक सौ अठ्ठाईस गुणा है। इस गुणकारकी उत्पत्ति कहते हैं-

----

तत्थ सव्वपश्छिमस्स सयम्भूरमणसमुद्दस्स खेत्तफलाणयणं भण्णदे-दीव-सागररुवाणि अध्दिदे समुद्दसंखा होदि। ताओ समुद्दसलागाओ रुवूणाओ करिय विरलिय रुवं पडि सोलस दादूण अण्णोण्णब्भत्थे कदे जोयणलक्खवग्गेण छत्तीस-सदरुवाहियतिसहस्सप्पदुपण्णेण जगपदरम्हि भागे हिदे एगभागो आगच्छदि। पुणो एदं दुगुणियं पुध ट्ठविय पुव्विल्लविरलणं विरलिय रुवं पडि चत्तारि दादूण अण्णोण्णब्भत्ते कदे छप्पण्णजोयणलक्खाए सेढिं खंडेदूण एगखंडमागच्छदि । तं पुव्विल्लदुगुणिदरासिम्हि अवणिदे सयंभूरमणसमुद्दस्स गुणगारसलागा होंति। एदाहि लवणसमुद्दखेत्तफले गुणिदे सयंभुरमणसमुद्दस्स खेत्तफलं जगपदरस्स वासीदिभागो सादिरेगो होदि[1]। एत्थ करणगाहा-

----

चारमेंसे एक कम करके शेषको विरलनकर और प्रत्येक रुपके प्रति सोलह देकर परस्पर गुणा करनेपर चार हजार छ्यानवै होते हैं। उन्हें दुगुणाकर पृथक् स्थापनकर पहलेकी विरलनराशिको विरलित

कर रुपके प्रति चार देकर परस्पर गुणा करनेपर चौसष्ठ संख्या उत्पन्न होती है। पुन: पहलेकी दुगुणित राशिमेंसे इस राशिको कम कर देनेपर चौथे समुद्रकी गुणकारशलाकाएं हो जाती हैं।

उदाहरण- चतुर्थसमुद्रकी क्रमशलाका ४;

१६X१६X१६

४ - १ = ३; १ १ १ = ४०९६; ४०९६ X २ = ८१९२;

४X४X४

१११ = ६४ ; ८१९२ - ६४ = ८१२८ चतुर्थ समुद्रकी गुणकारशलाका.

इन गुणकारशलाकाओंसे लवणसमुद्रके क्षेत्रफलको गुणा करनेपर चौथे समुद्रका क्षेत्रफल हो जाता है। इस प्रकार इस उक्त बीजपदसे सभी समुद्रोंका क्षेत्रफल निकालना चाहिये।

उनमें सबसे अन्तिम जो स्वयम्भूरमणसमुद्र है, उसके क्षेत्रफलको निकालनेका विधान कहते हैं- सर्वद्वीप और समुद्रोंकी जितनी संख्या है, उसे आधा करने पर सर्व समुद्रोंकी संख्या हो जाती है। उन समुद्रशलाकाओंको एक कम करके विरलनकर और प्रत्येक रुपके प्रति सोलह देकर आपसमें गुणा करने पर तीन हजार एक सौ छत्तीससे गुणित एक लाख योजनके वर्गसे जगत्प्रतरमें भाग देने पर एक भाग आता है। पुन: इसे दूना करके पृथक स्थापित कर पहलेके विरलनको विरलितकर प्रत्येक रुपके प्रति चार देकर आपसमें गुणा करने पर छप्पन्न लाख योजनके प्रमाणसे जगत्श्रेणीको खंडित करनेपर एक खंड आ जाता है। उसे पहले दूनी की गई राशिमेंसे घटा देनेपर स्वयंभूरमण समुद्रकी गुणकारशलाकाएं हो जाती हैं।

----

१ सयम्भूरमणसमुद्दस्स खेत्तफलं जगसेढीए वग्गं णवरुवेहिं गुणिय सतसदचउसीदिरुवेहिं भजिदमेत्तं पुणो एक्कलक्खं बारससहस्सपंचसयजोयणेहिं गुणिदरज्जूए अब्भहियं होदि । ति. प. पत्र १७१.

सोलह सोलसहिं गुणे रुवूणोवहिसलागसंखा त्ति ।

दुगुणम्हि तम्हि सोहे चउक्कपहदं चउक्कं तु ।। ६ ।।

संपदि सव्वसमुद्दाणं खेत्तफलसंकलणा वुच्चदे- लवणासमुद्दस्स एगा गुणगार सलागा, कालोदयसमुद्दस्स अट्ठावीस। एदेसिं संकलणमाणिज्जमाणे 'रुपोनमादिसंगुणमेकोनगुणोन्मथितमिच्छा' एदेण अज्जाखंडेण आणेदव्वं। एगमादि कादूण सोलसगुणकमेण गदा त्ति कट्टु दो रुवे ठविय[१] अध्दिय पुध[२] ठविय उवरि एगरुवं दादव्वं। पुणो तं सोलसेहि गुणिय 'रुपेषु गुणमर्थेषु वर्ग्गणं' एदेण अज्जाखंडेण

इन शलाकाओंसे लवणसमुद्रके क्षेत्रफलको गुणित करनेपर स्वयम्भूरमणसमुद्रका क्षेत्रफल जगत्प्रतरका साधिक व्यासीवां भाग आता है। इस विषयमें करणगाथा इसप्रकार है-

विवक्षित समुद्रकी क्रमशलाकाकी संख्यामेंसे एक कम करके शेष संख्या प्रमाण देवराशि सोलह, सोलहको परस्पर गुणित कर जो राशि उपलब्ध हो उसे दूना कर दे और पूर्वोक्त विरलन राशिप्रमाण चार चारको परस्पर गुणाकर लब्धको उस द्विगुणित राशिमेंसे घटा देनेपर विवक्षित समुद्रकी गुणकारशलाकाएं आ जाती हैं ।। ६ ।।

उदाहरण - सर्वद्वीप-समुद्रोंकी संख्या = २ अ; सर्वसमुद्रोंकी संख्या $\frac{\text{२ अ}}{\text{२}}$ = अ

$\text{१६}^{\text{अ}} - \text{१} = \frac{\text{र ७२ (जगत्प्रतर)}}{\text{१०००००३ X ३१३६}}$ = ब, ब X २ = २ ब,

$\text{४}^{\text{अ}} - \text{१} = \frac{\text{र ७}}{\text{५६०००००}}$ = स, २ ब - स = स्वयंभूरमणसमुद्रकी गुणकारशलाकाएं।

(२ ब - स) X ल. का क्षेत्रफल = स्वयंभूरमणसमुद्रका क्षेत्रफल = $\frac{\text{र ७}}{\text{८२}}$

अब सर्व समुद्रोंके क्षेत्रफल का संकलन कहते हैं- लवणसमुद्रकी गुणकारशलाका एक है, कालोदक समुद्रकी गुणकार शलाकाएं अट्ठाईस हैं। इनका संकलन लाने हेतु प्राप्तशलाका माननें से, 'एक कम शेषको आदिसे गुणित कर और एक कम गुणकारशलाका का भाग देकर इष्ट' इस आर्याखंडसे लाना चाहिये ।

चूंकि एक को आदि लेकर सोलह गुणक्रममें है, इसलिए दो रुपोंको स्थापित करते हैं आथितोंको पृथक् स्थापित करते है और ऊपर एक रुप दे देते हैं। पुन: उसे सोलहसे गुणित कर, रुपोंमें गुणा और

अर्थोमें वर्गणा, इस आर्याखंडसे प्राप्त दो सौ छप्पन्न रुपोंमेंसे एक कम कर आदिसे संगुणित करने पर तथा एक कम गुणकारसे भाजित करने पर जो लब्ध राशि हो उसे दुगुणा कर पांच घटा देते हैं। इससे एक पक्षमें (समुद्रों मात्र संबंधी) शलाकाओंका हो संकलन जाता है।

----

१ प्रतिषु ‘विय’ इति पाठः।

२ प्रतिषु ‘सुवर्ण’ इति पाठः।

लद्धविसदछप्पण्णेसु रुवूणेसु आदिसंगुणेसु रुवूणगुणगारेण भाजिदेसु जं लध्दं तं दुगुणिय पंच अवणिदे पक्खे सलागसंकलणा होदि। कधं पंच समुप्पण्णा ? पुव्वपक्खित्तएगादिचदुगुणकमेण गदरासिं मेलाविदे अवणयणरासी आगच्छदि। एदाहि पुव्वुत्तसंकलण-सलागाहि लवणसमुद्दखेत्तफलं गुणिदे लवण-कालोदयसमुद्दाणं खेत्तफलं होदि। तिण्हं

उदाहरण- लवणोदक और कालोदक की गुणकार शलाकाओंका

संकलन- लवणोदक क्रम शलाका - १ रुप = १

कालोदक क्रम शलाका - २ अर्थात् = १६

स्थापना १ या अर्थ

१ १६

१ १६ १६

‘रुपोंमें गुणा और अर्थामें वर्गणा’ करने पर गुणक्रम गत श्रेणी १, १६, $१६^{२}$ रुपमें बनती है। अथवा १, १६, २५६ होती है, जिसका योग $^{१ (२५६-१)}$ = <u>२५५</u> = १७ होता है। अब १७ X २ = ३४ होता है, और ३४-५ = २९ होता

१५

है, जो उक्त दो समुद्रों संबंधी गुणकार शलाकाओंका योग होता है।

शंका --- यहाँ पांचको कैसे उत्पन्न किया गया है?

समाधान --- पूर्वोक्त एकको आदि लेकर चतुर्गुणित क्रममें वृद्धिंगत राशिको मिला देने पर अपनयन राशि (पांच) प्राप्त हो जाती है।

उदाहरण- दो समुद्रोंकी अपनयन शलाका राशि

= १ + ४ = ५

इन पूर्वोक्त संकलन शलाकाओंसे लवणसमुद्र संबंधी क्षेत्रफलको गुणित करने पर लवण और कालोदक समुद्रोंका संकलित क्षेत्रफल हो जाता है।

उदाहरण - लवणसमुद्रका क्षेत्रफल = ७९०५६९४१५० X २४;

लवणोदक और कालोदक की संकलित गुणकार

शलाका राशि = २९

इसलिए लवणोदक और कालोदकका संकलित क्षेत्रफल

= ७९०५६९४१५० X २४ X २९

विशेषार्थ --- यदि जम्बूद्वीपकी त्रिज्या र मान ली जाये तो लवणसमुद्रकी त्रिज्या ४ र + र ५ र होगी। कालोदककी त्रिज्या १६ र + ८ र + ४ र + र अथवा २९ र होगी । इन दोनोंकेक्षेत्रफल क्रमश : २४ll र^{2} होंगे । इनका अनुपात १ और २८ होनेसे यही गुणकार शलाकाएं कहलाती हैं। अगले पुष्करवर समुद्रकी त्रिज्या १२५ र अथवा

समुद्दाणं खेत्तफलसंकलणा वुच्चदे- तिसु रुवेसु एगरुवमवणिय पुध ठ्ठविय सेसमध्दिय रुवस्सुवरि वग्गणं ठविय तस्सुवरि रुवं ठविय हेट्ठिम उवरिमरुवाणि सोलसेहि गुणिय ‘रुपेषु गुणमर्थेषु वर्ग्गणं’ एदेण अज्जाखंडेण लध्दा चारि सहस्सा छण्णउदी। ‘रुपोनमादिसंगुणमेकोनगुणोन्मथितमिच्छा’ एदेण अज्जाखंडेण लध्दाणि वे सदाणि

----

६४ र + ३२ + र १६ र + ८ र + ४ र + र होती है। ये सभी बाह्य बीथी माप संबंधी है। इन तीन समुद्रोंके क्षेत्रफलोंका अनुपात क्रमशः १: २८: ४९६ होता है । इसी प्रकार चार समुद्रोंकेक्षेत्रफलोंका अनुपात क्रमशः १: २८: ४९६: ८१२८ होता है।

इस प्रकार संकलित गुणकार शलाका श्रेणी इस प्रकार बनती है - १, १+२८, १+२८+४९६, १+२८+४९६+८१२८, ।।।।।.इत्यादि । अथवा १, २९. ५२५, ८६५३ ...... इत्यादि ।

मानलो इस श्रेणीका अंतिम पद अ न है जहाँ न पदोंकी संख्या है तथा योग स है।

स = १ + २९+५२५+८६५३ +.........+ अ न

अथवा स = ०+१+२९+५२५+.......+ अ न

- - - - - -

इस प्रकार ० = १+२८+४९६+८१२८+..........अ न

अंतिम पद अ न = १+२८+४९६+८१२८+.........

= १+ (१६१ X २ - ४) + (१६२ X २ ङ ४२)

+ (१६३ X २ - ४३) + ...न वें पद तक

अथवा अ न = १ + (१६१ X २ + १६२ X २ + १६३ X २ +.........)

- (४१ + ४२ + ४३ +...) न वें पद तक

= २ + २ (१६१ + १६२ + ...)

- (१ + ४ + ४२ +...) न वें पद तक

= २ (१+१६+१६+...)

- (१+४+४+...) वें न पद तक

-

= २ १ (१६ न - १) - १ (४ न - १)

(१६ -१) (४ - १)

इसी सूत्रका उपयोग वीरसेनाचार्य द्वारा समुद्रों संबंधी संकलित गुणकार शलाकाओंके संकलनको प्राप्त करने हेतु किया है। उपर्युक्तमें दूसरा पद अपनयन राशि है।

स्पष्ट है कि न = २ रखने पर संकलित गुणकार शलाका राशि उपरोक्त सूत्रद्वारा २९ प्राप्त हो जाती है। लवणसमुद्रका क्षेत्रफल ७९०५६९४१५० X २४ होनेसे तथा संकलित गुणकार शलाका राशि २९

होनेसे संकलित क्षेत्रफल लवण तथा कालोदक समुद्रोंका दोनोंके गुणन फल स्वरुप ७९०५६९४१५० X २४ X २९ प्राप्त हो जाता है ।

तेहत्तराणि, एदाणि दुगुणिय एक्कावीसमवणिदे गुणगारसलागासंकलणा होदि। कधमेक्कवीस्स उप्पत्ती ? एगरुवं विरलिय चत्तारि दादूण अण्णोण्णब्भत्थं करिय पंचहि गुणिय एगादिचदुग्गुणसंकलणं पक्खित्ते अवणयणसलागपमाणं एक्कवीसं होदि। एत्थ करणगाहा-

इट्ठसलागाखुत्तो चत्तारि परोप्परेण संगुणिय ।
पंचगुणे खित्तव्वा एगादिचदुगुणा संकलणा ।। ७ ।।

एत्थ सव्वत्थ दुरुवूणगच्छं विरलेदव्वं ५। २१।८५।३४१।१३६५।५४६१। एदाओ अवणयणधुवरासीओ अणंतरहेट्ठिमं चदुहि गुणिय रुवं पक्खित्ते

अब तीन समुद्रोंके क्षेत्रफलका संकलन कहते हैं- तीन रुपोंमेंसे एक रुपको घटाकर उसे पृथक् स्थापित करे। पुन: शेषको आधा कर रुपके ऊपर वर्गणराशिको स्थापितकर और उसके ऊपर रुपको स्थापितकर अधस्तन और उपरिम रुपोंको सोलहसे गुणाकर 'रुपोंमें गुणा और अर्थोंमें वर्गणा' आर्या छन्दके इस पादसे चार हजार छ्यानवै (४०९६) संख्या प्राप्त होती है। पुन: उक्त प्रकारसे प्राप्त शलाकाओंमेंसे 'एक कम करके शेषको आदिसे गुणा करें, पुन: एक कम गुणकारशलाकाका भाग दे, तो इष्टराशि उत्पन्न हो जाती है' आर्या छन्दकेइस पादके अनुसार दो सौ तेहत्तर (२७३) संख्या प्राप्त होती है। इस संख्याको दूनाकर उसमेंसे इक्कीस घटा देनेपर गुणकारशलाकाओंका संकलन हो जाता है।

उदाहरण - प्रथम तीन समुद्रोंका संकलन - शलाका ३;

१ X १६

१ X १६   १६x१६x१६ = ४०९६

१ X १६

४०९६-१   =   ४०९५   = २७३;   २७३X२ = ५४६; ५४६-२१ = ५२५

१५

तीन समुद्रोंकी संकलित गुणकारशलाका।

शंका --- यहाँपर घटाई जानेवाली इक्कीस संख्याकी उत्पत्ति कैसे हुई?

समाधान --- एकरुपको विरलित कर उसके ऊपर चारको देयरुपसे देकर अन्योन्याभ्यास करके उसे पांचसे गुणाकर एक आदि चतुर्गुण संकलनको प्रक्षेप करने पर अपनयनशलाकाका प्रमाण इक्कीस हो जाता है।

४

उदाहरण - २१ की उत्पत्ति - ३ - २ = १; १ = ४; ४ x ५ = २०; २० + १ = २१

तीन समुद्रोंकी अपनयनशलाका.

इस विषयमें यह करणगाथा है-

इष्ट शलाकाराशिका जो प्रमाण हो उतने वार चारको रखकर परस्परमें गुणा करें, पुन: उसे पांचसे गुणा करे और फिर एक आदि चतुर्गुणसंकलनराशिको प्रक्षेप करना चाहिये ।

ऐसा करनेपर अपनयनराशिका प्रमाण आ जाता है ।।७ ।।

छ. २६

उप्पज्जंति जाव सयंभुरमणसमुद्दो त्ति । संपदि सयंभुरमणसमुद्दविरहिदसव्वसमुद्द- खेत्तफलाणयणविधाणं वुच्चदे- दीव- सायररुवाणं अध्दं रुवूणं विरलिय रुवं पडिवेण्णि दादूण अण्णोण्णब्भासे कदे चोद्दसगुणिदजोयणलक्खमूलेण खंडिदसेढीए वग्गमूलस्स अध्दमागच्छदि । अध पुव्वविरलणाए रुवं पडि जदि चत्तारि रुवाणि दादूण अण्णोण्णब्भासे कीरदे, तो चोद्दसगुणजोयणलक्खेण खंडिदे सेढीए चदुभागो आगच्छदि। अध रुवं पडि सोलस दादूण अण्णोण्णब्भासो कीरदि, तो जोयणलक्खवग्गेण तिसहस्सछत्तीससदरुवगुणिदेण जगपदरम्हि भागे हिदे एगभागो

यहाँपर सर्वत्र दो रुप कम गच्छराशि का विरलन करना चाहिये ।५, २१, ८५, ३४१, १३६५, ५४६१, ये घटाई जानेवाली ध्रुवराशियां अनन्तर अधस्तन राशिको चारसे गुणाकर और उनमें एक प्रक्षेप करनेपर उत्पन्न होती है और इसी क्रमसे स्वयम्भूरमणसमुद्र तक उत्पन्न होती हुई चली जाती हैं।

४x४ = १६ १६x५+५ = ८५ चार स.

उदाहरण - (१) ४ - २ = २;   १ १

४x४x४x = ६४;६४x५+२१ = ३४१ पांच स.

(२) ५ - २ = ३;   १ १ १

४x४x४x४ = २५६;   २५६x५+८५ = १३६५ छह स.

(३) ६ - २ = ४;   १ १ १   १

४x४x४x४x४ = १०२४; १०२४x५+३४१ = ५४६१

(४) ७ - २ = ५;   १ १ १ १ १ सात स. इत्यादि.

अब स्वयम्भूरमणसमुद्रको छोडकर शेष सर्व समुद्रोंके क्षेत्रफल निकालनेका विधान कहते हैं- द्वीप और समुद्रोंकी जितनी संख्या है उसे आधाकर उसमेंसे एक घटावें ।पुन: शेष राशिका विरलनकर प्रत्येक रुपके प्रति देयरुपसे दो को देकर परस्पर गुणा करनेपर चतुर्दशगुणित लक्ष योजनके वर्गमूलसे खंडित जगत्श्रेणीके वर्गमूलका आधा प्रमाण आता है। अब यदि पूर्व विरलनराशिमें प्रत्येक रुपके प्रति चार रुपोंको देयरुपसे देकर परस्पर गुणा किया जाता है, तो चतुर्दश -गुणित लक्ष योजनसे खंडित जगत्श्रेणीका चौथा भाग आता है और यदि उसी विरलनराशिमें प्रत्येक रुपके प्रति सोलहको देयरुपसे देकर परस्पर गुणा किया जाता है तो तीन हजार एक सौ छत्तीस (३१३६) रुपोंसे गुणित लक्ष योजनके वर्गसे भाजित जगत्प्रतरका एक भाग आता है।

र ७

उदाहरण- (१) २ अ = अ, $^{२ अ - १}$ =   २

१४०००००यो.

र ७

४

(२) ४ $^{अ - १}$ = १४०००००० यो.

(३) $१६^{अ-१} = \frac{र\ ७^२}{१०००००^२ \times ३१३६}$

आगच्छदि। पुणो तं रुवूणं करिय एगेण आदिणा गुणिय पण्णारसरुवेहि भागे हिदे जोयणलक्खवग्गेण चालीसाहियसत्तेतालसहस्सरुवगुणिदेण जगपदरम्हि भागे हिदे एगभागो आगच्छदि । एदं दुगुणिय सेढिअसंखेज्जदिभागमेत्तमवणयणरासिं पुव्विल्लकरणगाहाए अवणिदमवणिय लवणसमुद्दखेत्तफलेण गुणिदे सयंभूरमणविरहिदसमुद्दाणं खेत्तफलं होदि। तं केत्तियमिदि भणिदे एगूण चालीसाहियवारससदरुवेहि जगपदरम्हि भागे हिदे एगभागपमाणं होदि। तत्थ मूलिल्लदोसमुद्दखेत्तफलं संखेज्जजोयणपदरमेत्तमवणिय रज्जुपदरम्हि अवणिदे एक्कवंचासरुवेहि सादिरेगेहि जगपदरम्हि खंडिदे एगखंडो आगच्छदि। तं संखेज्जसूचिअंगुलेहि गुणिदे तिरियलोगस्स

पुन: उसे, अर्थात् १६ के गुणितक्रमसे उपलब्ध राशिको, एक कम करके आदि स्थानवर्ती एकसे गुणितकर, पन्द्रह रुपोंसे भाग देनेपर चालीस अधिक सैंतालीस हजार अर्थात् सैंतालीस हजार चालीस (४७०४०) रुपोंसे गुणित लक्ष योजनके वर्गसे भाजित जगत्प्रतरका एक भाग आता है।

उदाहरण - १

$$\frac{\dfrac{र\ ७^२}{१०००००^२ \times ३१३६} - १}{१६ - १} = \frac{र\ ७^२}{१०००००^२ \times ४७०४०}$$

इस प्रमाणको दुगुणाकर उसमेंसे पूर्वोक्त करणगाथासे निकाली हुई जगत्श्रेणीके असंख्यातवे भागप्रमाण अपनयनराशिको घटाकर लवणसमुद्रके क्षेत्रफलसे गुणा करनेपर स्वयम्भूरमणसमुद्रसे रहित शेष समस्त समुद्रोंका क्षेत्रफल हो जाता है। वह क्षेत्रफल कितना होता है, ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि वह उनतालीस अधिक बारह सौ अर्थात् बारहसौ उनतालीस (१२३९) रुपोंसे भाजित जगत्प्रतरका एक भाग प्रमाण होता है।

उदाहरण- २ $\frac{र\ ७^२}{१०००००^२ \times ४७०४०} - \frac{र\ ७}{अ} \times ल = र\ ७^२/१२३९$ स्वयम्भूरमणको छोड शेष समुद्रोंका क्षेत्रफल.

(इसी प्रमाणको उत्पन्न करनेकी प्रक्रियाके विस्तारके लिये देखो गोम्मटसार जीवकांड सं. टीका व हिन्दी अनुवाद गाथा ५४७, पृ. ९६४ आदि.)

स्वयम्भूरमणसमुद्रसे रहित शेष समुद्रोंके उक्त क्षेत्रफलमेंसे मूल अर्थात् आदिके लवणोदधि और कालोदधि इन दो समुद्रोंके प्रतरात्मक संख्यात योजनप्रमाण क्षेत्रफलको घटाकर पुनः शेष राशिको प्रतरात्मक राजुके प्रमाणमेंसे घटा देनेपर साधिक इकावन रुपोंसे जगत्प्रतरके खंडित करनेपर एक खंड आ जाता है।

उदाहरण - र^{२} - र ७^{२} - २९ ल = र ७^{२} तिर्यग्लोकका संख्यातवां ५१ (कुछ अधिक) भाग तिर्यंच सासादन जीवोंका स्वस्थानक्षेत्र.

संखेज्जदिभागमेत्तं तिरिक्खसासणसत्थाणखेत्तं होदि। सेसपदसासणसम्मादिट्ठीहि सव्वे दीव-समुद्दा पुव्ववेरियदेवसंबंधेण फुसिज्जंति त्ति कट्टु जोयणलक्खबाहल्लं तप्पाओग्गबाहल्लं वा रज्जुपदरमुड्ढमेगूणवंचासखंडाणि करिय पदरागारेण ठ्ठइदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि । 'वा' सद्दस्स अत्थो गदो।

मारणंतियसमुग्घादगदेहि सत्त चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । तिरिक्ख-सासणा मेरुमूलादो हेट्ठा किण्ण मारणंतियं करेंति त्ति वुत्ते णेरइएसु किण्ण उप्पज्जंति ? सभावादो। जदि एवं, तो हेट्ठा सभावादो चेव मारणंतियं ण मेलंति त्ति किण्ण घेप्पदे ? जदि सासणसम्मादिट्ठिणो हेट्ठा ण मारणंतियं मेलंति, तो तेसि भवणवासियदेवेसु मेरुतलादो हेट्ठा ट्ठिदेसु उप्पत्ती ण पावदि त्ति वुत्ते ण एस दोसो, मेरुतलादो हेट्ठा सासणसम्मादिट्ठीणं मारणंतियं णत्ति त्ति एदं सामण्णवयणं।

उक्त एक खंडको तिर्यंचोंके अवगाहनासम्बन्धी संख्यात सूच्यंगुलोंसे गुणा करनेपर तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागप्रमाण तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्वस्थानक्षेत्र हो जाता है। चूंकि, विहारवत्स्वस्थानादि शेष पदस्थित तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टियोंके द्वारा समस्त द्वीप और समुद्र पूर्वभवके वैरी देवोंके सम्बन्धसे स्पर्श किये गये हैं, इसलिए लक्ष योजन बाहल्यवाले अथवा तत्प्रायोग्य बाहल्यवाले

राजुप्रतरके ऊपरकी ओरसे उनंचास खंड करके प्रतराकारसे स्थापित करनेपर तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग हो जाता है। इस प्रकारसे यह सूत्रपठित 'वा', शब्दका अर्थ हुआ।

मारणान्तिकसमुद्‌घातको प्राप्त तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टियोनें कुछ कम सात वटे चौदह (७/१४) भाग स्पर्श किये है।

शंका --- तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीव सुमेरुपर्वतके मूलभागसे नीचे मारणान्तिक समुध्दात क्यों नहीं करते हैं?

प्रतिशंका --- यदि ऐसी शंका करते हैं, तो आप ही बताइए कि तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीव नारकियोंमें क्यों नहीं उत्पन्न होते हैं?

समाधान --- वे नारकियोंमें स्वभावसे ही उत्पन्न नहीं होते है।

प्रतिसमाधान --- यदि ऐसा है तो सुमेरुपर्वतके मूलभागसे नीचे भी वे स्वभावसे मारणान्तिकसमुद्‌घात नहीं करते है, ऐसा क्यों नहीं स्वीकार कर लेते है ?

शंका --- यदि सासादनसम्यग्दृष्टि जीव मेरुतलसे नीचे मारणान्तिकसमुद्‌घात नहीं करते हैं तो मेरुतलसे नीचे स्थित भवनवासी देवोंमें उनकी उत्पत्ति भी नहीं प्राप्त होती है?

समाधान --- उक्त शंकापर धवलाकार उत्तर देते हैं कि यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, 'मेरुतलसे नीचे सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका मारणान्तिकसमुद्‌घात नहीं होता है' यह सामान्य अर्थात् द्रव्यार्थिकनयका वचन है। किन्तु विशेष अर्थात् पर्यायार्थिकनयकी

विसेसदो पुण भण्णमाणे णेरइएसु हेट्ठिमएइंदिएसु वा ण मारणंतियं मेलंति त्ति एस परमत्थो । कधमेत्थ देसूणत्तं ? ण ताव हेट्ठिमजोयणसहस्सेण ऊणा सत्त चोद्दसभागा, तिरिक्खसासणेहि भवणवासिएसु मारणंतियं मेल्लमाणेहि तस्स वि छुवणसंभवोवलंभादो । मेरुमूलादो हेट्ठा देसूणजोयणलक्खं फुसंताणं सासादणाणं सत्त-चोद्दस-भागेहि सादिरेगेहि होदव्वमिदि ? ण एस दोसो, छमग्गपयट्टेहि पडिणिययउप्पत्ति-

ट्ठाणेहि तसजीवेहि णिरंतरं ण सत्त रज्जू फुसिज्जंति, तधा संभवासंभवा। सो वि कधं णव्वदे? देसूणवयणण्णहाणुववत्तीदो । उववादस्स एक्कारह चोद्दसभागा फोसिदा त्ति वत्तव्वं । सुत्ते अउत्तं। कधमेदं णव्वदे ? कम्मइयकायजोगिसासणाण-

----

विवक्षासे कथन करने पर तो वे नारकियोंमें अथवा मेरुतलसे अधोभागवर्ती एकेन्द्रिय जीवोंमें मारणान्तिकसमुद्‌घात नहीं करते हैं, यही परमार्थ है।

शंका --- यहाँपर अर्थात् मारणान्तिकसमुद्‌घातगत सासादनसम्यग्दृष्टियोंके क्षेत्रमें देशोनता अर्थात् कुछ कम सात बटे चौदह भागका कथन कैसे किया? क्योंकि, मेरुतलके अधोभागवर्ती एक हजार योजनसे कम सात बटे चौदह (७/१४) भाग तो माने नहीं जा सकते । इसका कारण यह है कि भवनवासियोंमें मारणान्तिकसमुद्‌घातको करनेवाले तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टियोंके द्वारा उसके भी छुए जानेकी संभावना पाई जाती है। इसलिए मेरुतलसे नीचे कुछ कम एक लक्ष योजन प्रमाण क्षेत्रको स्पर्श करनेवाले तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टियोंका मारणान्तिक स्पर्शनक्षेत्र साधिक सात बटे चौदह (७/१४) भाग होना चाहिये, न कि देशोन सात बटे चौदह भाग ?

समाधान --- यह कोई दोष नहीं । इसका कारण यह है कि छहों भागोंसे प्रवृत्त, अर्थात् पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊर्ध्व और अधोदिशा सम्बन्धी छहों भागोंसे जानेवाले, एवं प्रतिनियत उत्पत्ति स्थानवाले त्रसजीवोंके द्वारा निरन्तर सात राजु स्पर्श नहीं किये जाते हैं, क्योंकि, उस प्रकारकी संभावनाका अभाव है।

शंका --- यह भी कैसे जाना ?

समाधान --- 'देशोन' वचनकी अन्यथा अनुपपत्तिसे। अर्थात् यदि मारणान्तिकसमुद्‌घात करनेवाले त्रसजीवोंके द्वारा निरन्तर सात राजु प्रमाण क्षेत्र स्पर्श किया जाता, तो सूत्र में 'देशोन' यह वचन नहीं दिया जाता। इस अन्यथानुपपत्तिसे जाना जाता है कि मारणान्तिकसमुद्‌घात करनेवाले त्रसजीवोंके द्वारा सात राजुके स्पर्श किये जानेकी निरन्तर संभावना नहीं है।

उपपादपदको प्राप्त तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टियोंने ग्यारह बटे चौदह (११/१४) भाग स्पर्श किये हैं, ऐसा कहना चाहिये ।

शंका --- सूत्रमें नहीं कही गई यह बात कैसे जानी जाती है ?

मेक्कारह-चोद्दसभागफोसणपरुवयसुत्तादो[१], खुद्दाबंधम्मि उववादपरिणयसासण-मेक्कारह-चोद्दसभागफोसणपरुवयसुत्तादो च णव्वदे । एत्थ महंते उववादफोसणखेत्ते संते मारणंतियफोसणमेव किमट्ठं परुविदं ? ण[२], एत्थ उववादविवक्खाए अभावादो। तदविवक्खा किण्णिबंधणा[३], सासणाणमेइंदिएसु अणुप्पज्जमाणाणं तत्थ मारणंतियविहाणणिबंधणा। तेण उववादस्स एक्कारह चोद्दसभागा फोसणमुवलब्भदे।

सम्मामिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो[४]।। २६ ।।

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणकाले सव्वपदपरुवणाए खेत्तभंगो । सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदसम्मामिच्छादिट्ठीहि तीदाणागदकालेसु

समाधान --- कार्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके ग्यारह बटे चौदह (११/१४) भागप्रमाण स्पर्शनक्षेत्रके प्ररुपक आगे कहे जानेवाले इसी स्पर्शनप्ररुपणाके सूत्रसे, तथा खुद्दाबंधमे कहे गये उपपादपरिणत सासादनसम्यग्दृष्टियोंके ग्यारह बटे चौदह (११/१४) भागप्रमाण स्पर्शन करनेकी प्ररुपणा करनेवाले सूत्रसे जाना जाता है कि उपपादपदको प्राप्त तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टियोंने ग्यारह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं।

शंका --- उक्त प्रकारसे इतना अधिक उपपादपदका स्पर्शनक्षेत्र होते हुए भी यहाँ पर मारणान्तिक स्पर्शनक्षेत्र ही किसलिए प्ररुपण किया ?

समाधान --- नहीं, क्योंकि, यहाँ पर उपपादपकी विवक्षाका अभाव है।

शंका --- उपपादपदकी अविवक्षा किं निमित्तक है?

समाधान --- उपपादपदकी अविवक्षा एकेन्द्रियोंमें नहीं उत्पन्न होनेवाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके उनमें मारणान्तिकसमुद्घातके विधाननिमित्तक हैं। अर्थात् सासादनसम्यग्दृष्टि जीव एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न नहीं होते हैं, फिर भी वे उनमें मारणान्तिकसमुद्घात करते हैं। इसलिए यहाँ पर उपपादपदकी विवक्षा नहीं की गई और इसीलिए उपपादपदका ग्यारह बटे चौदह (११/१४) भाग प्रमाण स्पर्शनक्षेत्र प्राप्त हो जाता है।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि तिर्यंचोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।। २६ ।।

इस सूत्रकी वर्तमानकालमें स्वस्थानादि सर्व पदसम्बन्धी स्पर्शनप्ररुपणा क्षेत्रप्ररुपणाके समान है। स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकसमुद्‌घात, इन पांच पदोंवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि तिर्यंचोंने भूत और भविष्य इन दोनों कालोंमे सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे

----

१ कम्मइयकायजोगीषु X X सासणसम्मादिट्‌ठीहि X X एक्कारह चोद्दसभागा देसूणा । जी. फो. ९६-९८.

२ म प्रतौ 'ण' इति पाठो नास्ति ।

३ प्रतिषु 'किण्णबंधणा' इति पाठः।

४ सम्यग्मिथ्यादृष्टिभिर्लोकस्यासंख्येयभागः । स. सि. १, ८.

तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो। एत्थ पज्जवट्ठियपरुवणा सासणपरुवणाए तुल्ला ।

असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो[१] ।। २७ ।।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु त्ति महाधिकारो अणुवट्टदे। एदं सुत्तं वट्टमाण-कालविसिट्ठअसंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदखेत्तं जदो परुवेदि, तदो एदस्स परुवणाए खेत्तभंगो।

छ चोद्दसभागा वा देसूणा ।। २८ ।।

असंजदसम्मादिट्‌ठीहि सत्थाणपदे वट्टमाणेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो अदीदकाले फोसिदो। एदे असंजदसम्मादिट्ठिणो सत्थाणपदे सव्वदीवेसु होंति, लावण-कालोदय-सयंभूरमण-समुद्देसु च। तम्हा सेससमुद्दखेत्तूणरज्जुपदरं एत्थ सत्थाणखेत्तं होदि। एदस्स णयणविधाणं पुव्वं व कादव्वं । विहार-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदेसु वट्टंता अदीदकाले

असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। यहाँपर पर्यायार्थिकनयकी स्पर्शनप्ररुपणा सासादनगुणस्थानकी स्पर्शनप्ररुपणाके तुल्य जानना चाहिये।

असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत गुणस्थानवर्ती तिर्यंचोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।।२७ ।।

तिर्यंचगतिमें तिर्यंचोंमें इस महाधिकारकी यहाँपर अनुवृत्ति होती है। चूंकि यह सूत्र वर्तमानकालविशिष्ट असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत तिर्यंचोंके स्पर्शनक्षेत्रका प्ररुपण करता है, इसलिए इसकी प्ररुपणा क्षेत्रके समान ही है।

उक्त दोनों गुणस्थानवर्ती तिर्यंच जीवोंने अतीत और अनागतकालकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किये है ।।२८।।

स्वस्थानपदपर वर्तमान असंयतसम्यग्दृष्टि तिर्यंचोनें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र अतीतकालमें स्पर्श किया है। ये असंयतसम्यग्दृष्टि तिर्यंच स्वस्थानस्वस्थानपदपर सर्व द्वीपोंमें होते हैं, तथा लवणसमुद्र, कालोदकसमुद्र और स्वयम्भूरमणसमुद्रमें भी होते हैं। इसलिए शेष समुद्रोंके क्षेत्रसे हीन राजुप्रतर यहाँपर स्वस्थानक्षेत्र होता है। इसके निकालनेका विधान पूर्वके समान ही करना चाहिये। विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकसमुद्घात, इन पदोंपर वर्तमान जीवोंने अतीतकालमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग,

----

१. असंयतसम्यग्दृष्टिभि:संयतासंयतैर्लोकस्यासंख्येयभागा: षट् चतुर्दशभागा वा देशोना । स. सि. १, ८.

तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागं, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागं, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणं फुसंति। कुदो ? पुव्ववेरियदेवपयोगदो जोयणलक्खबाहल्लं संखेज्जजोयणबाहल्लं वा रज्जुपदरं सव्वमदीदकाले फुसंति त्ति। मारणंतियपदे वट्टमाणेहि छ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । कुदो? अच्चुदकप्पादो उवरि तेसिमुप्पत्तीए अभावादो तत्थ गमणाभावा। ण च उप्पत्तिखेत्तमुल्लंघिय गमणं संभवदि, अइप्पसंगा। उवरि णवगेवेज्जेसु मिच्छादिट्ठिणो जदि उप्पज्जंति, तो असंजदसम्मादिट्ठीणं संजदासंजदाणं च उप्पत्ती किमिदि ण होज्ज ? मिच्छादिट्ठिणो दव्वलिंगेण उप्पज्जंति चे, एदे वि दव्वलिंगेण चेव उप्पज्जंतु,

ण को वि दोसो । उप्पज्जंतु चे, ण, खेत्तस्स देसूणसत्त[1] - चोद्दसभागत्तप्पसंगादो ? ण एस दोसो, जदि वि णवगेवेज्जेसु दव्वलिंगिणो असंजदसम्मादिट्ठि संजदासंजदा च उप्पज्जंति[2], तो वि सत्त चोद्दसभागा ण होंति,

----

तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है, क्योंकि, पूर्वभवके वैरी देवोंके प्रयोगसे एक लाख योजन बाहल्यवाला अथवा संख्यात योजन बाहल्यवाला राजुप्रतररुप सर्वक्षेत्र अतीतकालमें स्पर्श किया है। मारणान्तिकसमुद्‌घातपदपर वर्तमान जीवोंने कुछ कम छह बटे चौदह भाग (६/१४) स्पर्श किये हैं, क्योंकि, अच्युतकल्पसे ऊपर उनकी गमन संभव नहीं है, अन्यथा अतिप्रसंग दोष प्राप्त हो जायेगा।

शंका --- अच्युतकल्पसे ऊपर यदि नवग्रैवेयकोंमें मिथ्यादृष्टि मनुष्य उत्पन्न होते हैं, तो असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत तिर्यंचोंकी उत्पत्ति क्यों नहीं होनी चाहिये ? यदि कहा जाये कि मिथ्यादृष्टि मनुष्य द्रव्यलिंगसे उत्पन्न होते हैं, तो ये भी द्रव्यलिंगसे ही उत्पन्न होवे, इसमें कोई दोष नहीं है। यदि कहा जाये कि वे नवग्रैवेयकोंमें उत्पन्न होवें, सो ऐसा भी नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि, फिर स्पर्शनक्षेत्रके देशोन सात बटे चौदह (७/१४) भाग प्रमाण होनेका प्रसंग प्राप्त होगा ?

समाधान --- यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, यद्यपि नवग्रैवेयकोंमें द्रव्यलिंगी मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत जीव उत्पन्न होते हैं, तो भी सात बटे चौदह (७/१४) भागप्रमाण स्पर्शनक्षेत्र नहीं प्राप्त होता है, क्योंकि, उन नवग्रैवेयकोंमें मनुष्यक्षेत्रसे ही उत्पत्ति होती है। अर्थात उनमें मनुष्य ही उत्पन्न होते हैं, तिर्यंच नहीं।

उपपादगत असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानवर्ती तिर्यंच जीवोंने अतीतकालमें सामान्य

----

१. प्रतिषु 'तस्स' इति पाठः ।

२. णरतिरिय देस-अयदा उक्कस्सेणच्चुदो त्ति णिग्गंथा । णर अयद-देस-मिच्छा गेवेज्जंतो त्ति गच्छंति ।। त्रि. सा. ५४५.